मेरे अनुभूत दुर्लभ प्रयोग

११-१२-८६

सिद्धाश्रम पंचांग के अनुसार मार्ग शीर्ष शुक्ल १४ को भूत पिशाच सिद्धि दिवस माना गया है। पृथ्वी लोक के अलावा सात इतर योनियों के लोक माने गये है, जिनके नाम है, १- देवता, २- पितर, ३- अप्सरा वर्ग, ४- भूत प्रेत पिशाच, ५- गन्धर्व, ६- यक्ष, ७- किन्नर, ।

इनका तात्पर्य यह है, कि ये सभी मनुष्य के अलावा इतर योनियां कही जाती है, जिन्हे सिद्ध कर मानव उनसे सहायता ले सकता है, और अपने जीवन को अनुकूल बना सकता है। यदि वह देवताओं की साधना कर उनसे आशीर्वाद प्राप्त करने का आकांक्षी है, तो भूत प्रेत साधना सम्पन्न कर उनको भी पूर्णतः अनुकूल बना कर जीवन को सुविधा सम्पन्न बनाया जा सकता है।

इसी दृष्टि से सिद्धाश्रम ने इस दिवस को इस विशेष योनि "भूत-प्रेत-पिशाच" को सिद्ध करने और अपने अनुकूल बनाने के लिए इस दिवस का महत्व दिया है।

यदि सत्य बात कही जाय तो मनुष्य, मनुष्य को धोखा दे सकता है, मनुष्य मनुष्य को विश्वासघात कर सकता है, मनुष्य मनुष्य की हत्या कर सकता है, या उसे पीड़ा पहुँचा सकता है, या उसके लिए परेशानियां पैदा कर सकता है।

पर मनुष्य के अलावा इतर योनियां न तो विश्वास-घात करती है, न धोखा देती है, न उनके लिए किसी प्रकार की परेशानियां पैदा करती है, वे तो उलटे मनुष्य के लिए सहायक और उपयोगी है।

जिस प्रकार से हम अपने घर के दरवाजे पर गेटमेन या चौकीदार रखते समय इस बात का ध्यान रखते है, कि वह लम्बा चौड़ा कद्दावर और बलिष्ठ हो, उसका

चेहरा रौबिला और प्रभाव वाला हो, जिससे कि बाहरी व्यक्ति खौफ खाय और नुकसान पहुँचाने की चेष्टा न करे, ठीक इसी प्रकार से भूत प्रेत भी बलिष्ठ कद्दावर और रौबीले होते है, जिस प्रकार हमारा चौकीदार या अंग रक्षक हमें हानि नहीं पहुँचा सकता, उलटे बाहरी विपरीत तत्वों से रक्षा करता है; उसी प्रकार से ये भूत प्रेत पिशाच आदि भी चौबीसों घण्टे हमारी रक्षा करने को तत्पर रहते है और बाहरी दुश्मनों से हमें सुरक्षा प्रदान करते है।

और यह धारणा तो बिल्कुल गलत है, कि भूत प्रेत डरावने होते है, या भयानक होते है, अथवा उनके सिर पर सींग और लम्बे लम्बे दांत होते है, ये सारी बातें मनगडंत हैं, हमारी यह प्रवृति रही है, कि हम अपने शत्रु का विवरण इसी प्रकार के शब्दों से करते है। हकीकत में देखा जाय तो भूत प्रेत भी हमारी तरह सीधे सादे सरल है, यह अलग बात है, कि हम मनुष्य योनी में है, और वे भूत प्रेत योनी में। यह अलग बात है, कि हम एक दूसरे को देख पाते है, और वे हमें दिखाई नहीं देते, पर वास्तविकता तो यह है, कि वे अदृश्य रह कर हमें ज्यादा सुरक्षा, ज्यादा सहायता, और ज्यादा अनुकूलता प्रदान कर सकते है, मनुष्य तो विश्वासघाती और धोखा देने वाला हो सकता है, परन्तु भूत प्रेत जिसके नियंत्रण में होते है, न वे तो उसे धोखा देते है, न विश्वास घात और न किसी प्रकार का छल करते है।

इस तंत्र दिवस या दूसरे शब्दों में भूत प्रेत पिशाच दिवस के अवसर पर मैं तीन प्रयोग स्पष्ट कर रहा हूँ, जो सर्वथा प्रामाणिक है और अनुभूत है। मेरे पिताजी की मृत्यु बहुत पहले हो गई थी, और मैं पन्द्रह सोलह साल का था, तभी घर से निकल पड़ा था, मेरा जीवन का अधिकांश भाग औघड़ साधुओं के बीच बीता है, मेरे गुरू हबुआ स्वामी अपने समय के विख्यात औघड़ रहे है, भारतवर्ष में जिन साधकों ने औघड़ साधनाएं की हैं, या जो औघड़ साधना के बारे में रूचि रखते है, उनको हबुआ स्वामी के बारे में जरूर ज्ञान होगा, उनका शिष्य बनना गौरव की बात मानी जाती थी, मैं उनके सम्पर्क साहचर्य में कई वर्ष रहा, और कई औघड़ साधनाएं सीखी जो कि हमेशा सत्य सिद्ध हुई।

पत्रिका के अनुरोध पर मैं मेरे जीवन के गम्य तीन महत्वपूर्ण साधनाएं पत्रिका साधकों को स्पष्ट कर रहा हूं, और वे बिना भय और बिना किसी हिचकिचाहट के इन साधनाओं को सम्पन्न करे, तब उन्हें पता चलेगा कि ये साधनाएं कितनी महत्वपूर्ण और जीवन के लिए आवश्यक है।

ये साधनाएं अपने घर में सम्पन्न की जा सकती हैं, श्मशान में जाने की या श्मशान की राख बिछाने की कोई जरूरत नहीं है, गृहस्थ व्यक्ति भी इस प्रकार की साधनाएं अपने घर में सम्पन्न कर सकता है, गायत्री उपासक या शिव अथवा विष्णु उपासक भी इस प्रकार की साधनाओं को सम्पन्न कर सकता है। इस साधना में किसी प्रकार का कोई दोष नहीं है, यदि किसी वजह से साधना असफल भी हो जाय तब भी इसका कोई विपरीत प्रभाव देखने को नहीं मिलता।

अगर सिद्धाश्रम जैसे उच्च कोटि के आश्रम ने भूत प्रेत पिशाच दिवस के महत्व को समझा है, तो जो पाठक इसमें रुचि रखते है, वे इन साधनाओं को अवश्य ही सम्पन्न करे और हाथों हाथ इसका लाभ अनुभव करें।

यहां पर मैं यह बात स्पष्ट कर दूं कि मार्ग शीर्ष शुक्ल १४ तो इस कार्य के लिए नियुक्त है ही, जो कि इस वर्ष ११-१२-८९ को स्पष्ट हो रही है, पर यों भी किसी भी शुक्रवार को पूरे वर्ष में कभी भी इन साधनाओं को सम्पन्न की जा सकती है।

हिडिम्बा साधना

हिडिम्बा को हमने राक्षसी माना है, और यह महाभारत काल के भीम की पत्नी थी, पर पूरे हिमाचल

प्रदेश में हिडिम्बा को कुल देवी माना जाता है, वहां इसकी पूजा होती है. प्रत्येक हिमाचल प्रदेश में व्यक्ति हिडिम्बा की पूजा और साधना उसी प्रकार से करता है, जिस प्रकार से हम जगदम्बा, शिव या विष्णु की करते है। अगर वह राक्षसी ही होती तो हिमाचल प्रदेश के लोग उसे कुल देवी कैसे मानते ? मैं पहले भी स्पष्ट कर चुका हूं कि यह तो हमारे सोचने का अन्तर है, राक्षसी भी हमारी तरह से सौम्य सरल सात्विक देवी होती है।

हिडिम्बा साधना जीवन की महत्वपूर्ण साधना है, इस साधना को सम्पन्न करने पर निश्चय ही पांच लाभ होते है।

१- इससे घर में सुरक्षा रहती है, और घर पर या दुकान पर कोई तांत्रिक प्रयोग हो तो वह दूर हो जाता है।

२- यदि किसी प्रकार की भूत प्रेत बाधा हो तो हिडिम्बा मंत्र सिद्ध होने पर वह इस समस्या का समाधान कर सकता है।

३- हिडिम्बा सिद्ध होने पर वह साधक की निरन्तर रक्षा करती है, और विविध उपद्रवों से बचाती है।

४- हिडिम्बा सिद्ध होने पर साधक को निरन्तर धन, द्रव्य, आभूषण आदि अनायास प्राप्त होते रहते है।

५- हिडिम्बा सिद्ध होने पर वह साधक की प्रत्येक मनोकामना पूरी करती है।

साधना प्रयोग

रात्रि को साधक काली धोती पहिन कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर काले आसन पर बैठ जाय, सामने एक स्टील की थाली ले कर उसके मध्य में त्रिकोण बनावे और त्रिकोण के बीच में एक छोटी सी सिन्दूर की बिन्दी लगावे। इसके बाद त्रिकोण के तीनों कोनों पर एक एक बिल्ली की नाल रख दें। इसका तात्पर्य यह है कि इस साधना में तीन बिल्ली की नाल का प्रयोग होता है, फिर मध्य में जो सिन्दूर की बिन्दी लगाई है, उस पर "सिद्धि फल" रखे और इस त्रिकोण को हिडिम्बा मान कर उसकी सामान्य पूजा करें। सामने तेल का दीपक लगावे, और हकीक की नीली माला से मंत्र जप करे। मंत्र जप करते समय कमरे में दूसरा कोई नहीं होना चाहिए इसमें इस रात्रि को केवल २१ माला मन्त्र जप करें।

हिडिम्बा सिद्ध मंत्र

ॐ ई चिल क्रीं क्रीं फ्लूं फ्लूं हिडिम्बायै हिलि हिलि फट्॥

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तब वह माला उस यंत्र पर ही रख दे, और रात्रि को ही वह माला तथा तीनों बिल्ली की नाल घर के बाहर रास्ते पर रख दें, पानी का लोटा साथ में ले जावे और उसके चारों ओर पानी से घेरा बना दें, और वह खाली लोटा लेकर घर पर आ जाय।

घर आने के बाद स्नान करके साधक सो जाय, ऐसा करने पर हिडिम्बा सिद्ध होती है, जब कभी उपरोक्त हिडिम्बा मन्त्र का ११ बार उच्चारण किया जाता है, तो हिडिम्बा अदृश्य रूप में ही सही, पर साधक की आंखों के सामने प्रत्यक्ष दिखाई देती है और उसे जो भी कार्य कहा जाता है, वह कार्य सम्पन्न करती है।

इसके अलावा भी यदि उसे कोई भी कार्य नही सौंपा जाता तो भी वे ऊपर बताये हुए रक्षा आदि कार्यों को तो साधक के लिए करती ही रहती है।

यह साधना भूत प्रेत पिशाच दिवस अथवा किसी भी शुक्रवार को सम्पन्न की जा सकती है।

२- भूत सिद्धि

यह मेरा अनुभूत प्रयोग है, और मैंने अपने जीवन में इससे बहुत लाभ उठाया है, मैं ऊपर भी बता चुका हूं कि भूत प्रेत भी हमारी तरह ही सामान्य सरल सात्विक व्यक्ति होते है और हमें बराबर सहयोग प्रदान करते रहते है। भूत साधना के निम्न पांच लाभ तो तुरन्त प्राप्त होने लग जाते है।

१- भूत सिद्ध होने पर वह हर क्षण साधक के साथ रहेगा और जब साधक उसे आवाज दे कर मत्र पढ़ेगा तो उसकी आंखों के सामने स्पष्ट होगा। साधक तो उसे देख सकेगा परन्तु यदि पास में कोई दूसरे व्यक्ति बैठे हुए है, तो उन्हें वह भूत दिखाई नहीं देगा।

२- साधक अपने जीवन में भूत को जो भी कार्य सौंपता है, वह आज्ञाकारी सेवक की तरह तुरन्त पूरा करता है, कभी कभी तो वह कठिन और असाध्य कार्य भी साधक के लिए कर बैठता है।

३- भूत सिद्ध होने पर वह घर में नौकर की तरह बना रहता है, और साधक की आज्ञा पर वह घर के छोटे बडे कार्य भी करने को तैयार रहता है।

४- साधक की आज्ञा होने पर वह अदृश्य रूप में रह कर साधक के शत्रुओं से लड़ाई लड़ लेता है और उन्हें बहुत अधिक हानि पहुंचा देता है, ऐसे साधक के दुश्मन हर क्षण भय से थरथराते रहते है।

५- भूत वस में होने पर साधक उससे जो भी द्रव्य, धन, या पदार्थ मंगाना चाहता है, वह लाकर प्रदान करता है, और कभी भी कार्य में शिथिलता नहीं बरतता।

साधना प्रयोग

देखा जाय तो अन्य देवी देवताओं की अपेक्षा यह साधना सरल है और साधक आसानी से इस साधना को सम्पन्न कर सकता है, हिडिम्बा साधना या भूत साधना कोई भी पुरूष या स्त्री सम्पन्न कर सकता है। इस साधना को भी इस दिवस पर अथवा किसी भी शुक्रवार की रात्रि को सम्पन्न किया जा सकता है।

साधक स्नान कर तहमद की तरह की एक धोती कमर के नीचे बांध ले, जिस प्रकार से मुसलमान तहमद बांधते है, उसी प्रकार से धोती को बांधे अर्थात पीछे लांग न लगावे, और फिर जिस प्रकार मुसलमान नमाज पढते समय बैठते है. उसी प्रकार से साधक दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय, सामने एक स्टील की थाली ले और पूरी थाली काजल से रंग दें। फिर किसी तिनके की सहायता से उस थाली में पुरुष की आकृति बनावे, और उस आकृति के सिर पर सियार सिंगी तथा दोनो पैरो पर भी एक एक सियार सिंगी रखे, इस प्रकार इस प्रयोग में तीन सियार सिंगी का प्रयोग होता है। उस आकृति के मध्य में या सीने पर एक शूकर दन्त रख दें फिर इसके सामने तीन तेल के दीपक लगावें, और उसी प्रकार बैठे बैठे रूद्राक्ष माला से मंत्र जप करे।

भूत सिद्धि मंत्र

।। ॐ भ्रं भ्रूं भूतनाथाय फट् ।।

इस रात्रि को २१ माला मंत्र जप करने का विधान है, जब मंत्र जप पूरा हो जाय तो सामने पुरुष की आकृति दिखाई देगी जो सामान्य मनुष्य की तरह होगी, उससे भयभीत होने की आवश्यकता नही है। साधक मंत्र जप पूरा होने पर उससे प्रश्न पूछे कि तुम्हारा नाम क्या है, तब वह अपना नाम बतायेगा।

फिर साधक उसके ऊपर जल छिड़कता हुआ कहे कि तू मेरे वश में रहेगा और मैं अपने जीवन में तुम्हारा नाम लेकर मंत्र पढ़कर आवाज दूं तब तुम आवोगे और मेरा कार्य करोगे।

ऐसा होने के बाद जब भूत अदृश्य हो जाय तब थाली में रखी हुई, तीनो सियारसिंगी तथा शूकरदन्त एक लाल पोटली में बांध दे और उसे अपने घर में रख दे, या

जमीन में गाड़ दे। घर में रखने पर भी किसी प्रकार का कोई दोष नहीं है।

इसके बाद जब भी उस भूत को उसका नाम बोल कर ११ बार उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करेगे तो वह भूत अदृश्य रूप में साधक के सामने होगा। साधक उसे देख सकेगा, पर पास में बैठे हुए अन्य लोग उसे नहीं देख सकेगे।

तब साधक मन ही मन अथवा धीरे से जो भी आज्ञा देगा, वह भूत अवश्य ही उस कार्य को सम्पन्न करेगा।

यह मेरा अनुभूत प्रयोग है, और मैंने जितनी बार भी आजमाया है, मुझे इसमें पूरी सफलता मिली है।

३- पिशाच सिद्धि

यह भी भूत की तरह ही एक योनी होती है, पर अत्यन्त बलिष्ठ, अत्यन्त मजबूत और दृढ़ निश्चय युक्त। यदि साधक इसे सिद्ध करले, और इसे आज्ञा दे दे तो सामने चाहें, पचास शत्रु, बन्दूक या पिस्तोल लाठी या भालें लिए हुए खड़े हो तो उसे पांच मिनट में ही मटियामेंट कर देता है।

यह पिशाच साधक के साथ चौबीसों घण्टे अदृश्य रूप में रहता है और साधक की प्रत्येक आज्ञा का पालन करता है। बहुत दूर से कोई पदार्थ मंगवा लेना किसी के घर से कोई सामान निकाल कर लाना, साधक को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचा देना, किसी अन्य व्यक्ति को सैकड़ों मील दूर से उठा कर ले आना, आदि कार्य पिशाच के द्वारा सहज संभव है।

इसके बावजूद भी यह अत्यन्त सौम्य और सरल होते है, तथा साधक की प्रत्येक आज्ञा का पालन करता है,

साधना प्रयोग

इस साधना को इस दिवस या किसी भी शुक्रवार की रात्रि को सम्पन्न किया जा सकता है, साधक काली धोती पहिन कर काले आसन पर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर खड़ा हो जाय, अपने सामने एक लोहे या स्टील की थाली में सिन्दूर से पुरूष आकृति बनावे और उस आकृति के सिर पर तीन तांत्रिक नारियल रखे, पैरों के पास तीन हकीक नग रखें, मध्य में शूकर दन्त रखे और थाली में ही पांच तेल के दीपक लगा दें, और फिर दो रंगों की हकीक माला अथवा दो रंगों की स्फटिक माला से २१ माला मंत्र जप करें।

पिशाच सिद्धि मन्त्र

।। ऐं क्रीं क्रीं खिंत्र खिंत्र खिचि खिचि पिशाच खिंत्र खिंत्र फट्।।

जब २१ माला मन्त्र जप पूरा हो जाय तब थाली में रखी हुई सारी सामग्री तथा वह माला ले कर घर के बाहर किसी स्थान पर रास्ते पर रख दें, और उसके चारों ओर पानी के लोटे में भरे हुए जल से एक घेरा बना ले और थाली तथा लोटा लेकर वापिस घर आ जाय दोनों बर्तन मांज ले फिर साधक स्नान कर ले ऐसा होने पर पिशाच सिद्ध होता है।

इसके बाद जब भी उपरोक्त मंत्र का पांच बार साधक उच्चारण करेगा तब वह अदृश्य रूप में साधक के सामने हाथ जोडे खड़ा होगा, उसे जो भी आज्ञा दी जायेगी वह तत्क्षण निश्चय ही पूरी होगी।

ये सभी साधनाए महत्वपूर्ण है, साधक इनको सम्पन्न करे और सिद्धि मिलने पर किसी को बतावे नहीं, वे इस प्रकार की साधनाओं का समाजोपयोगी सदुपयोग करे।